साहित्य और कानून के बीच गहरा संबंध : दीपक मिश्रा

साहित्य महोत्सव में लोगों को संबोधित करते पूर्व मुख्य न्यायाधीश दीपक मिश्रा।

नई दिल्ली, प्रमुख संवाददाता। साहित्य और कानून का आपस में गहरा संबंध है। साहित्य का सामाजिक न्याय के साथ सुखद गरिमापूर्ण और प्रभावशाली संबंध है।

उक्त बातें पूर्व मुख्य न्यायधीश दीपक मिश्रा ने सोमवार को साहित्य अकादमी में आयोजित साहित्योत्सव में साहित्य और समाजिक न्याय विषय पर दर्शकों को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि जिस तरह साहित्य के कई खंड होते है उसी तरह सामाजिक न्याय की अवधारणा में भी कई पहलू शामिल होते हैं जैसे समानता, सहानुभूति, आपसी सम्मान, समावेशिता, मानवतावाद और मानवाधिकारों का मूल्य आदि।

उन्होंने प्रसिद्ध अमेरिकी विधिवेत्ता और न्यायशास्त्री रोस्को पाउंड को उद्धृत करते हुए कहा कि मैं उनकी इस बात से सहमत हूं कानून स्थिर होना चाहिए लेकिन स्थिर नहीं रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि समाज में न्याय की स्थापना केवल न्यायालयों तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि साहित्य के माध्यम से भी समाज के हर वर्ग की आवाज को प्रमुखता से प्रस्तुत करना आवश्यक है। साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित किए जा रहे एशिया के सबसे बड़े साहित्योत्सव के चौथे दिन 22 से अधिक कार्यक्रमों में विभिन्न भारतीय भाषाओं के 140 से ज्यादा लेखकों ने भागीदारी की।